एक दो की ग्लानी कब न करे। यह ऐसा है फलाना ऐसा है। बहुत बच्चे हैं जिनके अन्दर में यह किचड़ा रहता है। फिर दूसरों को बैठ सुनाते हैं। फलाना ऐसा है यह है। जो इन बातों में लग जाते हैं वह ऊंच पद पा न सकेंगे। ऐसे ही रह जाते हैं। कितना सहज समझाया जाता है इनको याद करो बाप को याद करो तो तुम यह बन ही जावेंगे। सन्यासी आदि जो जानवरों आदि का मिसाल बताते हैं वह सभी हैं फलट। यहां तो तुम सामने बैठे हो। सभी के घर में यह ल०ना० का चित्र जरूर होनी चाहिए। कितना एक्युरेट चित्र है। इनको याद करेंगे तो बाबा याद आवेगा। बाबा को याद करो तो यह याद आवेगा। सारा दिन और बातों के बदले यही सुनाते रहो। फलाना ऐसा है, यह है किसकी निन्दा करना इसको दुबिध्या कहा जाता है। यह तो जानते हैं, सभी बन्दर बुधि मनुष्य हैं। उनको पलटाना है अर्थात दैवीबुधि बनाना है। किसको दुःख देना ग्लानी करना चंचलता करना वह स्वभाव न होना चाहिए। इन बन्दरपने में तो आधा कल्प रहे हो। अभी तुम बच्चों को कितनी मीठी शिक्षा मिलती है। इनसे ऊंच प्यार दूसरा कोई होता ही नहीं। कब भी कोई उल्टा सुल्टा काम श्रीमतबिगर न करना चाहिए। बाप ध्यान के लिये भी डायरेक्शन देते हैं सिर्फ भोग लगाकर आओ। बाबा यह तो कहते नहीं कि बैकुण्ठ में जाओ। रास-विलास आदि करो। दूसरे जगह गई तो समझो माया की प्रवेशता हुई। माया का नम्बरवन कर्तव्य गटर में डालना। बेकायदे चलन से नुकसान बहुत होता है। हो सकता है फिर कड़ी सजाएं भी खानी पड़ें। अगर अपन को सम्भालेंगे नहीं तो बाप के साथ धर्मराज भी है। इनके पास बेहद का हिसाब किताब रहता है। बच्चे डरते नहीं हैं; कहां सजाएं न खावें। रावण के जेल में कितन वर्ष से सजाएं खाई है। इस दुनिया में कितना अपार दुःख है। अभी बाप कहते हैं और सभी बातें भूल बाप को ही याद करो। और सभी दुबिध्या अन्दर से निकाल दो। विकार में कौन ले जाते हैं? माया के भूत। तुम्हारा एमआबजेक्ट ही यह है। राजयोग है ना। बाप याद करने से यह वरसा मिलेगा। तो इसही धंधे में लग जाना चाहिए। किचड़ा सारा अन्दर से निकाल देना चाहिए। माया की इसि परीक्षा भी बहुत कड़ी है। परन्तु उनको उड़ाते रहना है। जितना हो सके याद की यात्रा में रहना है। अभी तो निरन्तर याद हो न सके। आखरीन निरन्तर तक भी आवेंगे। तब ही ऊंच पद पावेंगे। अगर अन्दर दुबिध्या, खराब ख्यालात होगी तो ऊंच पद मिल न सके। माया के वस होकर ही हार खाते हैं। बाप समझाते हैं बच्चे गंदा काम कराओ मत। निन्दा आदि करते2 तो तुम्हारी इतनी बुरी गति हुई है। अभी सदगति होती है तो बुरे कर्म न करो। बाबा देखते हैं माया ने आधा तक ग्रास कर लिया है, पता भी नहीं पड़ता। खुद समझते हैं हम बहुत अच्छा चल रहे हैं। परन्तु नहीं। बाप समझाते हैं मनसा वाचा कर्मणा। मुख से रत्न ही निकले। पत्थर न निकलनी चाहिए। बहुतों के मुख से पत्थर ही निकलते हैं। एक ही समय है जब कि तुम्हारे मुख से रत्न ही निकलनी चाहिए। गंदी बातें करना पत्थर है। अभी तुम पत्थर से पारस बनते हो। तो मुख से कभी भी पत्थर नहीं निकलनी चाहिए। हमेशा रत्न ही निकले। बाबा को तो समझाना पड़ता है। बाप का हक है बच्चों को समझाना। ऐसे तो नहीं भाई भाई को लकड़ी मारेंगे वा सावधानी देंगे। टीचर का काम है शिक्षा देना। वह कुछ भी कह सकते हैं। स्टुडेन्ट को लॉ हाथ नहीं उठाना है। तुम स्टुडेन्ट हो ना। बाप शिक्षा देते हैं। बाकी बच्चों को तो बाप का डायरेक्शन है एक बाप को याद करो। तुम्हारी तकदीर अभी खुली है। श्रीमत पर न चलने से तुम्हारी तकदीर बिगड़ पड़ेगी। फिर बहुत बहुत पछताना पड़ेगा। बाप की श्रीमत पर न चलने से एक तो सजाएं खानी पड़े और फिर पद भी भ्रष्ट। जन्म-जन्मान्तर कला कमजोर की यह बातें है। बाप आकर पढ़ाते हैं। तो बुधि में रहना चाहिए। बाबा हमारा टीचर भी है। यह नई नालेज मिलती है कि अपन को आत्मा समझो। आत्माएं और परमात्मा का मेला कहा जाता है ना। फिर 5000 वर्ष बाद मिलेंगे। इसमें जितना वरसा लेने चाहो ले सकते हो। नहीं तो बहुत पछतावेंगे। जार जार रोवेंगे। सभी सा० हो जावेगा। स्कूल में बच्चे ट्रान्सफर होते हैं तो पिछाड़ी में बैठने वालों को सभी देखते हैं। यहां भी ट्रान्सफर होनी है। तुम जानते हो हम यहां शरीर छोड़कर फिर जाकर सतयुग में प्रिन्स के कालेज में पढ़ेंगे भाषा। वहां की भाषा तो सभी को पढ़नी पड़ती